पाठ–16
नींव की ईंट हो तुम दीदी

मूल पाठ :–

पीपल होतीं तुम

पीपल, दीदी

पिछवाड़े का, तो

तुम्हारी खूब घनी–हरी टहनियों में

हारिल हम

बसेरा लेते।

हारिल होते हैं हमारी तरह ही

घोंसले नहीं बनाते कहीं

बसते नहीं कभी

दूर पहाड़ों से आते हैं

दूर जंगलों को उड़ जाते हैं।

पीपल की छाँह

तुम्हारी तरह ही

ठंडी होती है दोपहर।

ढिबरी थीं दीदी तुम

हमारे बचपन की

अचार का तलछट तेल

अपनी कपास की बाती में सोखकर

जलती रहीं।

हमने सीखे थे पहले–पहल अक्षर

और अनुभवों से भरे किस्से

तुम्हारी उजली साँस के स्पर्श में।

जलती रहीं तुम

तुम्हारा धुआँ सोखती रहीं

घर की गूँगी दीवारें

छप्पर के तिनके–तिनके

धुँधले होते गए

और तुम्हारी

थोड़ी सी कठिन रोशनी में

हम बड़े होते रहे।

भाई यादों की दुनिया में अपनी बहन से मुखातिब है। उसे पीपल की याद आती है। पीपल का पेड़ विशाल, घना, छायादार, विपरीत मौसम में भी हरा–भरा, शांत और स्नेहिल होता है। गर्मी की तेज और तीखी दुपहरी में भी उसके नीचे छाँह की शीतल बारिश होती रहती है। भाई कहता है कि दीदी यदि तुम पीपल होतीं तो तुम्हारी खूब घनी हरी टहनियों पर हम बसेरा कर लेते। हम हारिल हैं। हारिल कहीं बसते नहीं, टिकते नहीं। पर, तुम यदि पीपल होतीं, तो हम तुम्हारी खूब घनी–हरी टहनियों पर बसेरा बना लेते! भाई स्वयं को हारिल कहता है। हारिल एक प्रकार का पक्षी है जो प्रायः अपने चंगुल में कोई लकड़ी या तिनका लिए रहता है। इसका रंग हरा, पैर पीले, और चोंच कासनी रंग की होती है। हारिल की विशेषता है कि यदि यह घायल होकर किसी वृक्ष की शाखा में लटक जाए तो

मरने पर भी इसके पंजों से वह शाखा नहीं छूटती। वह उस लकड़ी को नहीं छोड़ता। हारिल की इसी विशेषता को देखकर कृष्णभक्त कवि सूरदास ने अपने आराध्य से अपना जुड़ाव व्यक्त करने के लिए कहा है– 'हमारे हरि हारिल की लकड़ी'। यानी, वे हारिल हैं और उनके हरि लकड़ी; जिसे वे छोड़ नहीं सकते।

यहाँ एक भाई को दीदी पीपल की तरह लगती है। इसलिए कि न जाने जीवन के कितने अभावों, दुखों और कष्टों से उसने अपने भाई को दूर रखा होगा। उस तक उनकी तपिश न आने दी होगी। दुख और अभाव खुद झेल लिए होंगे और बदले में स्नेह और निश्चिन्तता की बारिश करती रही होगी।

भाई आगे कहता है कि दीदी तुम हमारे बचपन की ढिबरी थीं। ऐसी ढिबरी जिसकी कपास की बाती अचार के तलछट को सोखकर जलती थी। एक भाई अपनी बहन को ढिबरी क्यों कहता है, और अचार का तलछट तेल के क्या मायने हैं। भाई दीदी को ढिबरी कहता है, वह उसे दीया नहीं कहता। ढिबरी की बत्ती दीये से लंबी होती है और वह दीये की तुलना में देर तक जलती है। वह तेल कम सोखती है। उसकी लौ काँपती रहती है, पर तुरंत नहीं बुझती। भाई अपनी बहन को ढिबरी कहता है, बहन ने गृहस्थी की गाड़ी को आगे खींचने के लिए एक ढिबरी की तरह ही अपने को जलाया था।

पहले–पहले अक्षर और अनुभवों से भरे किस्से; यानी दुनिया को समझाना। पहले ही कहा गया है कि कविता में माँ और पिता में से किसी का उल्लेख नहीं है। केवल एक बहन है और उसका भाई है। सभी भूमिका निर्वाह बहन ही करती है, वह अभावों की तीखी धूप से बचाती है, ममता की ठंडी छाँह देती है, गृहस्थी की गाड़ी आगे बढ़ाती है, भाई को दुनियादारी से परिचित कराती है। यह दुनिया कैसी है, बहन भाई को सीखाती है। 'उजली' साँस' से तात्पर्य पवित्रता से है। बहन के अनथक श्रम से है। यह साँस काली न थी, उजली थी! उजली साँस जिससे दूसरे को जीवन मिले, जो जिन्दगी फैलाए! बहन अपनी जिंदगी की हरेक घड़ी, हरेक साँस में अपने भाई को कुछ दे रही थी, उसे कुछ

सिखा रही थी, दुनिया की समझ दे रही थी। बहन के प्रति भाई की पवित्र भावनाएँ इससे व्यंजित होती है। जैसे बहन की उजली साँसें सबकुछ को छुकर उजला कर देती हों।

बहन ने न जाने कितने दुख उठाए, कितनी मुसीबतें झेलीं, क्या–क्या किया, इस घर ने वह सब कुछ देखा है, घर की दीवारों ने, घर के छप्पर ने, छप्पर के तिनके–तिनके ने! पर, ये दीवारें गूँगी हैं! ये नहीं बतायेंगी कि तुम्हारे भीतर कौन सा धुआँ उठता था! कौन सी आग तुम्हारे भीतर जलती रहती थी, ये सब जानती हैं, पर ये न बताएँगी! तुम्हारा धुआँ ये सोखती रहीं, क्या जलता था तुम्हारे भीतर। दीदी, यही वह आग थी जिसकी रोशनी में हम बड़े होते रहे। ये रोशनी आसानी से नहीं मिलती थी।

नदी होतीं, तो
हम मछलियाँ होकर
किसी चमकदार लहर की
उछाह में छुपते
कभी–कभी बूँदें लेते
सीपी बन
किनारों पर चमकते।

चट्टान थीं दीदी तुम
सालों पुरानी।
तुम्हारे भीतर के ठोस पत्थर में
जहाँ कोई सोता नहीं निझरता,
हमीं पैदा करते थे हलचल
हमीं उड़ाते थे पतंग।

चट्टान थीं तुम और

तुम्हारी चढ़ती उम्र के ठोस सन्नाटे में

हमीं थे छोटे–छोटे पक्षी

उड़ते तुम्हारे भीतर

यहाँ झूले पड़े थे हमारी खातिर

गड्डे रखे थे हमारी खातिर

मालदह पकता था हमारी खातिर

हमारी गेंदें वहाँ गुम हो गई थीं।

भाई अपनी बहन को याद करते हुए कहता है कि यदि तुम नदी होतीं तो हम मछलियाँ बनते, तुम्हारी चमकदार उछलती लहरों में छुपते, उनके साथ रहते। यदि तुम नदी होती तो हम सीपी होते, तुम्हारी बूँदे कभी–कभी लेकर हम भी किनारों प चमकते। दीदी तुम तो वर्षों पुरानी चट्टान थीं! ऐसी चट्टान जिससे पानी का कोई सोता नहीं निकलता था।

बहन को चट्टान कहने से कवि का अभिप्राय उसे कठोर नहीं कहना है, बल्कि यह बताना है कि उसने एक चट्टान की तरह सब कुछ झेल लिया। एक चट्टान जैसे धूप–हवा–पानी सबकुछ झेल जाती है, वैसे ही बहन ने क्या–क्या नहीं झेला। अभावों के दिन, कष्टों की धूप सबकुछ! ऐसे में दीदी, ये हम ही थे जो तुम्हारे भीतर कुछ हलचल पैदा करते थे, हमसे ही तुम थोड़ा हँस–बहल लेती थी। हम जो पतंग उड़ाते थे, हम जो खेल खेलते थे, उसके सहारे तुम्हारी जिंदगी में कुछ खुशियाँ आ जाती थीं। तुम्हारी उम्र बढ़ती जा रही थी, और वहाँ एक सन्नाटा फैलता जा रहा था, एक ऐसा सन्नाटा जिसमें तुम्हारी कोई इच्छा, किसी सपने का कोई अता–पता नहीं चलता था, तुम कुछ चाहती भी हो,

तुम्हारे भी कुछ सपने हैं, कुछ उम्मीदें हैं, इनका का कोई अता–पता नहीं था। दीदी तुम चट्टान थी, इसलिए नहीं कि तुम कठोर थी, बल्कि इसलिए कि तुमने एक चट्टान की तरह अपने को बना लिया था, सबकुछ सहने के लिए खुद को तैयार कर लिया था, और कोई दूसरा तुम्हारे भीतर की हलचल, तुम्हारी इच्छाओं को जान न जाए, कोई सोता इस चट्टान के भीतर भी होगा, इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर पाया। दिदिया, ऐसे में हम ही वे पक्षी थे, जो उस सन्नाटे को तनिक तोड़ते थे। दिदिया तुम हमारे लिए ही चट्टान बनी थी, हमें कोई कष्ट–अभाव न हो, इसलिए तुमने खुद को चट्टान बना लिया था अपनी इच्छाओं को दबा दिया। तुमने हमारे लिए कोई कमी कभी न रखी।

भाई अपनी स्मृतियों की दुनिया में है, और उसे बहन से जुड़ी हुई बचपन की न जाने कितनी बातें याद आती हैं। बहन क बढ़ती उम्र, उसका एक चट्टान हो जाना, उसकी अपनी जिंदगी का सूनापन, और यह भी कि यह भाई ही था जिससे उसकी जिंदगी में कुछ हलचल पैदा होती थी। बहन ने भाई के लिए हर भूमिका निभाई। उसकी खुशियों और बचपन के लिए हर चीजें जुटाई। भाई याद करता है कि दीदी, तुमने अपने जीवन में शोर, हलचल इच्छाओं के लिए कोई जगह ही नहीं रखी, पर तुमने हमारे लिए कोई कमी नहीं की। हमारे लिए सबकुछ जुटाया तुमने। झूले भी, गुड्डे भी, मालदह भी, गेंदें भी, सबकुछ। हमारी जिंदगी में तुमने कोई सन्नाटा नहीं आने दिया, खुशियों की गूँज भरती रही।

दीदी, अब
अपने दूसरे घर की
नींव की ईंट हुई तुम तो
तुम्हारी नई दुनिया में भी
होंगी कहीं हमारी खोई हुई गेंदें
होंगे कहीं हमारे पतंग और खिलौने

अब तो ढिबरी हुई तुम

नए आँगन की

कोई और बचपन

चीन्हता होगा पहले–पहल अक्षर

सुनता होगा किस्से

और यों

दुनिया को समझता होगा।

हमारा क्या है दिदिया री!

हारिल हैं हम तो

आएँगे बरस–दो बरस में कभी

दो–चार दिन

मेहमान–सा ठहरकर

फिर उड़ लेंगे कहीं और।

घोंसले नहीं बनाए हमने

बसे नहीं आज तक।

कठिन है

हमारा जीवन भी

तुम्हारी तरह ही।

बहन अब दूसरे घर जा चुकी है। एक नए घर में, भाई कहता है कि दीदी अब तुम एक नए घर की नींव की ईंट हो, एक नया घर तुम्हारे आधार पर टिका है, वह सबकुछ जो तुम इस घर के लिए थी, अब वही एक नए घर के लिए हुई। दीदी, तुम्हारी इस नई दुनिया में कहीं हमारे लिए भी कोई जगह होगी! कविता की पंक्तियाँ हैं– तुम्हारी नई दुनिया में भी/होंगी कहीं हमारी खोई गेंदें/होंगे कहीं हमारे पतंग और खिलौने। दीदी क्या तुम्हारे जीवन में हमारे लिए कोई जगह होगी! हमारी गेंदें, हमारे पतंग तुम्हारी नई दुनिया में कहीं होंगे। एक ढिबरी की तरह अब तुम दूसरे आँगन में रोशनी कर रही होगी, कोई और तुम्हारे सहारे दुनिया को समझता होगा, तरह–तरह के किस्से सुनता होगा। तुम्हारी भूमिका नहीं बदली होगी। तुम अभी भी वही होगी, तुम इस घर की नींव की ईंट थी, अभी भी तुम नींव की ईंट ही होगी।

बहन अब भी वही जिंदगी जी रही है। अचार के तलछट तेल की तरह, चट्टान की तरह, छप्पर और दीवार की तरह, उसकी जिंदगी में कुछ नहीं बदला होगा।

भाई आगे कहता है कि – दिदिया री! हम तो हारिल हैं। कहीं स्थाई रूप से टिकना हमें नहीं आता। हम कहीं घोंसला नहीं बनाते। बस दो–चार दिन कहीं मेहमान सा ठहर नए इलाके की ओर उड़ जाते हैं। दिदिया री – इस संबोधन में भाई–बहन के संबंध की सहजता और स्नेह उमड़ आया है। भाई पूरी भावना के साथ यह कहता है, जैसे अपना मन खोलकर रख दिया हो। किसी भी तरह का बनावटीपन नहीं। 'री' इस संबोधन में और लगता है जैसे भाई और बहन के बीच अब कोई दूरी नहीं रही, यहीं यह कविता बेहद मार्मिक हो जाती है। एक भाई कहता है कि दिदिया हमने आज तक घोंसले नहीं बनाए, कहीं टिके नहीं, कहीं बसे नहीं आज तक, उड़ना और भटकना ही हमारी जिंदगी हो गया है। हमारा जीवन भी तुम्हारी तरह ही कठिन है।

उदय प्रकाश